

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि



0755CH01



पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ 1 ॥

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।

सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥ 2 ॥

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये ।

विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥ 3 ॥

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।

सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥ 4 ॥

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥ 5 ॥

क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते ।

शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥ 6 ॥

शब्दार्थः

| | | |
|------------------------------------|------------------------|-------------------------|
| पृथिव्याम् | - धरती पर | on the earth |
| सुभाषितम् | - सुन्दर वचन | good sayings |
| मूढैः | - मूर्खों के द्वारा | by fools |
| पाषाणखण्डेषु | - पत्थर के टुकड़ों में | in stone pieces |
| रत्नसंज्ञा | - रत्न का नाम | name of precious stone |
| विधीयते | - किया/समझा जाता है | to be done/given |
| धार्यते | - धारण किया जाता है | bears |
| तपते | - जलता है | burns/heats |
| वाति | - बहता है / बहती है | blows |
| वायुश्च (वायुः+च) | - पवन भी | air |
| प्रतिष्ठितम् | - स्थित है | situated |
| तपसि | - तपस्या में | in penance |
| शौर्ये | - बल में | in bravery |
| नये | - नीति में | in policy |
| विस्मयः | - आश्चर्य | wonder |
| बहुरत्ना | - अनेक रत्नों वाली | possessing many jewells |
| वसुन्धरा | - पृथिवी | earth |
| सद्भिरेव (सद्भिः+एव) | - सज्जनों के साथ ही | with gentlemen alone |
| सहासीत (सह+आसीत) | - साथ बैठना चाहिए | should sit together |
| कुर्वीत | - करना चाहिए | should do |
| सद्भिर्विवादम् (सद्भिः+विवादम्) | - सज्जनों के साथ झगड़ा | quarrel with gentlemen |

| | | |
|------------------------------------------|--------------------------------------------------------|-----------------------------------------------|
| क्षमावशीकृतिलोके (क्षमावशीकृतिः+लोके) | - संसार में क्षमा (सबसे बड़ा) वशीकरण है | forgiveness is an enchantment in the world |
| नासद्भिः (न+असद्भिः) | - असज्जन लोगों के साथ नहीं | not with ungentlemanly people |
| धनधान्यप्रयोगेषु संग्रहेषु | - धनधान्य के प्रयोग में संग्रहों में, संचय करने में | in the use of wealth in accumulation |
| त्यक्तलज्जः | - संकोच या भीरुता को छोड़नेवाला | one who has given up shyness |
| शान्तिखड्गः | - शान्ति की तलवार | sword of peace |



1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।
2. यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत-

क

धनधान्यप्रयोगेषु
विस्मयो न हि कर्तव्यः
सत्येन धार्यते पृथ्वी
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च
आहारे व्यवहारे च

ख

नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
बहुरत्ना वसुन्धरा।
विद्यायाः संग्रहेषु च।
सत्येन तपते रविः।



3. एकपदेन उत्तरत-

- (क) पृथिव्यां कति रत्नानि?
(ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?
(ग) पृथिवी केन धार्यते?
(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?
(ङ) लोके वशीकृतिः का?

4. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) सत्येन वाति वायुः।
(ख) सद्भिः एव सहासीत।
(ग) वसुन्धरा बहुरत्ना भवति।
(घ) विद्यायाः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
(ङ) सद्भिः मैत्रीं कुर्वीत।

5. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

- (क) कुत्र विस्मयः न कर्त्तव्यः?
(ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?
(ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत्?

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिङ्गानुसारं लिखत-

रत्नानि वसुन्धरा सत्येन सुखी अन्नम् वह्निः रविः पृथ्वी सङ्गतिम्

पुंलिङ्गम्

.....
.....
.....

स्त्रीलिङ्गम्

.....
.....
.....

नपुंसकलिङ्गम्

.....
.....
.....

7. अधोलिखितपदेषु धातवः के सन्ति?

पदम्

करोति

पश्य

भवेत्

तिष्ठति

धातुः

.....
.....
.....
.....

